शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2014

हिन्दी उपन्यासकार के रूप में शिवानी : एक मूल्यांकन

रश्मि छाबड़ा
माता गुज़री कॉलेज
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी साहित्य के आकाष में असंख्य सितारों का उदय हुआ। उनकी रोशनी ने हिन्दी साहित्य को जगमगा दिया। हिन्दी साहित्य का आँगन अनेक साहित्यकारों की बहुमूल्य रचनाओं से रोशन हुआ है। हिन्दी साहित्य में अनेक उपन्यासकारों, कहानीकारों, नाटककारों कवियों, लेखकों आदि का प्रादुर्भाव हुआ। सबकी अपनी अलग ही पहचान है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में कई महिला लेखिकाएं सक्रिय रहीं, उन्होंने अपनी कलम से हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की। उनके नाम कुछ इस प्रकार हैं - मन्नू भंडारी, मालती जोशी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, शिवानी, मैत्रेयी पुष्पा उषा प्रियंवदा आदि। आयु व अनुभव की दृष्टि से शिवानी इन सबसे वरिष्ठ हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में शिवानी के व्यक्तित्व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

डॉ.सावित्री सिन्हा के शब्दों में "नई लेखिकाओं में सबसे प्यारा नाम है शिवानी का। उनकी गहरी अंतरदृष्टी सस्ती भावुकता से परे है व मार्मिक है। उनकी सहज किंतु संदर्भ गर्भित अभिव्यंजन थोड़े में ही बहुत कुछ कह जाती है।1 शिवानी जी का जन्म 17 अक्टूबर 1930 को सौराष्ट्र की राजकोट रियासत में श्री अश्विनी पांडे नामक आदर्श शिक्षक और सात्विक ब्राहमण के यहाँ हुआ। इनके दादा व पिता सदा से ही रियासतों में राजगुरू रहे। इनके पिता राजकुमार कॉलेज राजकोट में प्रोफेसर थे। शिवानी जी की माता लीलावती पांडे बहुत पढ़ी-लिखी व महान व विदुषी महिला थीं और घर में हिन्दी, गुजराती और संस्कृत पुस्तकों का अत्यंत समृद्ध पुस्तकालय था। धर्म में भी उनकी गहरी आस्था थी। शिवानी जब बारह साल की हुईं तब उन्हें गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के संरक्षण में शांतिनिकेतन में पढ़ने भेजा गया। उन्हें गुरूदेव का सहज स्नेह व सामिप्य मिला। लेखन की प्रेरणा भी उन्हें यही से मिली। शिवानी जब बी ए.की छात्रा थी तभी उनका विवाह हो गया। यह विवाह उनके माता-पिता की इच्छा का परिणाम था। स्वयं शिवानी जी के शब्दों में "शादी माता-पिता ने तय की थी। मैने उन्हें पहले देखा भी नहीं था तब मैं बी. ए. में पढ़ती थी। फिर उनकी अंतिम सांस तक मुझे संतोष रहा कि शायद कोई लव मैरिज भी करती तो इतना अच्छा साथी नहीं मिलता।2 विवाह के बाद भी उनके विद्याध्ययन में कोई बाधा उपस्थित नहीं हुई। शिवानी जी के पति पढ़े-लिखे विद्वान व्यक्ति थे। शुरू में वे लेक्चरार थे फिर शिक्षा मंत्रालय में जवाइंट

सेक्रेटरी हो गये। उनके पति की प्रेरणा से ही शिवानी जी लेखन प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हुई। परंतु पति की मृत्यु के बाद कुछ बिखर सी गई किंतु कुछ दिनों बाद वे संभल गई। सुरंगमा पति की मृत्यु के बाद लिखा पहला उपन्यास है। शिवानी जी की तीन पुत्रियां व एक पुत्र है। इनकी पुत्री मृणाल पांडे सुप्रसिद्ध लेखिका हैं तथा टी. वी. के कई कार्यक्रमों की प्रस्तुति इनके द्वारा की जाती है। शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन की स्थितियों का यथार्थपरक चित्रण है। उनके मोहक व जादुई वैविध्य साहित्य के क्षेत्र में उपलब्धियों के लिए सरकार ने उन्हे "पद्मश्री" से अलंकृत किया है और उन्हें 'प्रेमचंद पुरस्कार', विशेष पुरस्कार, महादेवी पुरस्कार आदि से सम्मानित किया है। इंदौर में जब 5 सितंबर 79 को आई थी उन्हें रवीन्द्र नाट्य गृह में सम्मान पत्र प्रदान किया गया था, तब उन्होंने कहा था कि -"प्रशंसा एक धीमा जहर है जो कलाकर को अहंकारी बना कर प्रतिभा को समाप्त कर देता है।"3 21 मार्च 2003 को शिवानी जी निधन हुआ। अब शिवानी नही है लेकिन षिवानी अपने उपन्यासों में, अपनी कहानियों में, अपने लिखे संस्मरणों में और अपने पाठकों के बीच आज भी मौजूद हैं। जब भी कोई उनके साहित्य को बाचेगा शिवानी अपनी छवियां बिखेरती वहाँ उन्हें मिल जायेंगी तब श्रद्धांजलि किसे अर्पित की जाये ?4 साहित्यकार अपनी अनंत यात्रा पर निकल जाता है परंतु उसका साहित्य पाठकों के मन में रह जाता है। साहित्यकार की स्मृतियाँ अमर हैं।

शिवानी जी का लेखन

शिवानी जी ने मात्र बारह वर्ष की उम्र से लिखना प्रारंभ कर दिया था। स्वयं उनके शब्दों में - "मेरी पहली रचना तब छपी जब मैं बारह वर्ष की थी अलमोड़ा से 'नटखट नामक पत्रिका में पहली रचना छपी थी उसके पश्चात मैं शांति निकेतन चली गई। वहां हस्तलिखित पत्रिका निकलती थी। उसमें मेरी रचनाएँ नियमित रूप से छपती थी। सच कहूँ तो लिखना मेरे लिए नशा है जैसे किसी शराबी की लत होती है बिना पिए वह रह नहीं सकता, ठीक वैसी ही दशा मेरी है। मैं बिना लिखे, नहीं रह सकती। एक पंक्ति ही क्यों न लिखू लेकिन प्रतिदिन लिखती अवश्य हूँ।5 परिवार उनकी लेखनी में कभी आड़े नहीं आया अपितु उनके पति उन्हें लिखने के लिये प्रोत्साहित किया करते थे। वे उनके सच्चे आलोचक थे। उनकी हिन्दी भी बहुत अच्छी थी। शिवानी जी ने लगभग सत्रह उपन्यासों की रचना की है जिनमें कुछ लघु उपन्यास भी हैं। सभी उपन्यासों की पृष्ठभूमि या कथावस्तु नारी की समस्याओं पर आधारित है परंतु उनके प्रत्येक उपन्यास में चित्रित नारी की समस्या के विविध रूप चित्रित किए गए हैं।

उपन्यास - मायापुरी, चौदह फेरे, भैरवी, कृष्ण कली, विषकन्या, श्मशान, चंपा, कैंजा, रति विलाप, सुरगंमा, किषनुली, चल खुसरों घर अपने, कृष्ण वेणी विवर्त, अतिथि, मेर भाई, एक थी रामरति, मुहब्बत। 'कृष्ण कली' उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। इसके दस से भी ज्यादा संस्मरण प्रकाशित हो चुके हैं। सुरगंमा व रति विलाप पर टीवी धारावाहिक बन चुके हैं। छठे दशक में शिवानी का साहित्यिक व्यक्तित्व निखरा और पाठकों के सामने "चौदह फेरे" लाल हवेली, भैरवी, विषकन्या आदि उपन्यास लगातार आते रहे। नारी मुक्ति के संदर्भ में सही दिशा और स्वस्थ नजरिए को प्रस्तुत करते हुए औरत की आजादी

और इंसाफ की मांग निरंतर जारी है। रूढ़िग्रस्त औरत के अंदर छुपी औरत बाहर आने का प्रयास कर रही है, यही सब कुछ है शिवानी के उपन्यास साहित्य में व साथ ही नारी हृदय के प्रेम की अभिव्यक्ति का सटीक चित्रण भी है, शिवानी जी के उपन्यासों में ऐसी ताजगी है जो दिनो-दिन परवान चढ़ती गई। शिवानी जी के उपन्यासों में समाज की विसंगतियों के तीखे चित्र उनकी रचनाओं, के केन्द्र बिंदु है परंतु उन्होंने कभी भी क्लिष्ट शैली का प्रयोग नहीं किया। उनकी विषय वस्तु के घेरे में नारी ही प्रमुख है, कथाक्रम महिलाओं की समस्याओं एवं उनके रोजमर्रा के जीवन के आसपास घूमता है। शिवानी जी के उपन्यासों में पीड़ित, दमित, उपेक्षित, असहाय, और अपमानित नारी की भावनाओं की नूतन अंतर्लोक की विविध झाकियाँ प्रस्तुत की है। हिन्दी उपन्यासकार के रूप में शिवानी जी का मूल्यांकन करना कठिन है क्योंकि किसी बहती नदी की धारा के वेग का मूल्यांकन करना जितना कठिन कार्य है उतना ही एक साहित्यकार का मूल्यांकन करना मुश्किल है। शिवानी ने अपने कृतिव से न केवल समकालीन लेखिकाओं में बल्कि उपन्यास साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। इनकी कई रचनाओं पर जैसे भैरवी रतिविलाप कृष्णकली को विभिन्न प्रदेशों ने पुरस्कृत किया है। कोई भी जागरूक, संवेदनशील साहित्यकार अपने आस-पास के परिवेश से दूर व तटस्थ नहीं रह सकता है। महानगरों में मानव जीवन की स्थिति क्या है, रेल में चलते-चलते मिलने वाली किसी आधुनिकता को उन्होंने निकट से देखा हो या किसी अभागिन स्त्री की समाचार पत्र में छपने वाली घटनाए हों ये सारे दैनिक जीवन के रोजमर्रा के समाचार शिवानी को प्रेरणा देते हैं। दिखावे की भावना से कोसों दूर शिवानी अपनी लेखनी के प्रति पूरी तरह ईमानदारी से व भारतीय नारी की विशेषताओं को पहाड़ी क्षेत्र की नारियों की जिंदगी को शिवानी ने अपने उपन्यासों में बहुत बारीकी से चित्रित किया है। शोषित और उपेक्षित जीवन के जहर को आँसूओं के घूंट के साथ पीने वाली समाज की नजरों से उपेक्षित स्त्री वर्ग की करूण व्यथा को भी लेखिका ने अपने सशक्त लेखन के माध्यम से पाठकों के सामने रखा है। इनके उपन्यासों में आधुनिक समाज की पढ़ी लिखी नारी स्वतंत्रता के गुणगान करने वाली नारियाँ भी शामिल हैं। शिवानी को कभी आर्थिक अभाव नहीं मिला परंतु अपनी कुमांउनी धरती के निवासियों के अभावपूर्ण संघर्षरत जीवन को उन्होंने निकटता से देखा है। उन्होंने आर्थिक संघर्ष कभी नहीं देखा परंतु जीवन चरित्रों को वैसे का वैसा चित्रण करने के लिए शिवानी को बेहद संघर्ष करना पड़ा है। यह उन्होंने स्वीकार किया है। आलोचको ने शिवानी पर एकरसता का आरोप भी लगाया है। उनके आरोपों का उत्तर देते हुए शिवानी कहती हैं - "मनुष्य का जीवन एक है उसमें एकरसता तो है लेकिन पाठकों के संबंध में उस एकरसता को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि पाठकों को आनंद आता है। पाठकों को लगता है कि यह जीवन मैंने जीया है, देखा है। कम से कम मैंने आज तक जितने उपन्यास लिखे हैं, उनमें केवल कल्पना ही नही यथार्थ भी है।

शिवानी ने आधुनिक जीवन के अनेक कोणों को उपन्यास विधा के द्वारा मार्मिकता और सफलता के साथ उजागर किया है। उससे वे निश्चित ही अपनी समकालीन महिला उपन्यास लेखिकाओं में अग्रणी है। उनका लेखन तो उनके व्यक्तित्व की ही भांति निरंतर विकसित और समृद्ध होता रहा

है और यही किसी भी लेखक के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। उनकी भाषा, उपन्यास की भाषा पर शिवानी का असाधारण अधिकार है, भावों की जो अभिव्यक्ति उपन्यासों में की गई है वह महसूस की जा सकती है। वर्णन की सजीवता अनोखी छटा बिखेरती है तथा जीवन के विविध चित्रों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है जो अर्वणनीय है। उनका उपन्यास साहित्य नारी जीवन पर आधारित है जिसका प्रमुख उद्देश्य नारी की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालकर उसका हल प्रस्तुत करना है। प्रत्येक उपन्यास में उन्होंने समस्याओं को उठाया है। चाहे वह राजनैतिक भ्रष्टता हो या स्त्री जाति पर अत्याचार की बात हो, महानगरीय समस्या या अनेक मानसिक समस्याओं को भी अपने साहित्य में इन्होंने प्रमुख रूप से स्थान दिया है। उन्होंने समस्याओं का हल भी प्रस्तुत किया है। शिवानी के उपन्यास का आरंभ किसी आकस्मिक परिस्थितियों या घटनाओं से नहीं होता है बल्कि कथावस्तु जैसे ही प्रारंभ होती है एक सजीव वातावरण कायम हो जाता है और उपन्यास के प्रारंभ से ही पाठकों के मन में कौतूहल व जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है कि अब आगे क्या होगा ? और यही जिज्ञासा पाठकों में उसे एक ही बार में पढ़ने की ललक व चाह उत्पन्न कर देती है। उनके उपन्यास में भावात्मक लगाव देखने को मिलता है। इसका मुख्य कारण यह है सजीवता तथा चित्रात्मक शैली नूतन शब्दों का प्रयोग उनके उपन्यासों का सौंदर्य बढ़ा देता है। अलंकार उसे रूप प्रदान करते हैं। वातावरण सजीव बना रहे इसके लिए वे स्वाभाविकता का सहारा लेती है।

शिवानी के उपन्यासों में कथावस्तु का भी बहुत ध्यान रखा गया है। साथ में पात्रों का चित्रांकन भी बहुत महत्वपूर्ण है। इस संबंध में डॉ.गुलाबराय अपना मत इस प्रकार व्यक्त करते हैं, "यदि उपन्यास का मूल विषय मनुष्य है तो चित्रण उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है।"6 शिवानी के उपन्यासों के पात्र इसी संसार के प्राणी हैं। जिनमें मानव मन की विभिन्न संवेदनाएं हैं। उन्होंने जीवन में नैतिक मूल्यों को बहुत महत्व दिया है। उनका कहना है कि वर्तमान में समाज में नैतिक मूल्यों में भारी गिरावट आई है किंतु इन मूल्यों को पुनः स्थापित करने का कार्य नारी वर्ग ही कर सकती है। शिवानी का व्यक्तिगत जीवन भले ही सुख के क्षणों में बीता हो पर उनकी अंतरदृष्टि दबी पीड़ा और विषाद के सरोवर में बहुत गहरे तक जाने की अभ्यस्त है। शिवानी के उपन्यासों में कला की नवीनता, घटनाओं की नाटकीयता, वातावरण की सुंदर, सजीवता तथा युगीन समस्याओं का संवेदनापूर्ण चित्रण मिलता है। ये ऐसी महत्वपूर्ण विषेषताएँ है जो शिवानी को एक सफल उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित करती है। शिवानी के उपन्यास समस्या युक्त रहते हैं, नारी की कोई न कोई मानसिक समस्या या उलझन प्रमुखता से दर्शाई गई है और साथ् ही उनका हल भी प्रस्तुत किया जाता है। वे अपने उपन्यासों में स्त्री-पुरूष संबंधों की समस्याओं को स्थान देती हैं।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि शिवानी नारी मन की कथा व्यथा को व्यक्त करने में सफल रही हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिवानी अपने समय की एक ईमानदार व सफल तथा सर्वाधिक लोकप्रिय कथा लेखिका है विशेषत: नारी जीवन के नये-नये परिदृष्यों को अंकित करने में और महानगरीय सभ्यता के बीच जीवन की विवष

ISSN 2320 – 0871
17 मार्च 2014

परिस्थितियों को चित्रित करने में शिवानी का योगदान आधुनिक साहित्य में भुलाया नहीं जा सकता है। शिवानी के उपन्यासों में कुमाऊँ की सुकुमारता, गुजरात की शालीनता, बंगाल की भावुकता तथा लखनऊ की कुलीनता झलकती है। कथा और शिल्प की दृष्टि से उनके उपन्यास हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं।